2019.01.0346

नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, ३१ मार्च, १९८४ ९

क्षितिज

तुगलक : शरीर और संवाद

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता - निर्देशक व नाटककार गिरीश करनाड का नाटक 'तुगलक' एक चुनौतीपूर्ण कृति है। अल्काजी और कई अन्य जाने - पहचाने निर्देशकों ने इस नाटक को खेला है; लंदन में आयोजित 'भारत - महोत्सव' में भी राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नाट्य - मंडल ने इस का प्रदर्शन किया था। इसकी मंच - सज्जा को लेकर अल्काजी ने एक प्रयोग किया था। उन्होंने नाटक का मंचन पुराने किले की पृष्ठ-भूमि में किया था। अल्काजी की यह प्रस्तुति आज भी याद की जाती है।

अब इसे एक नई संस्था 'चिंगारी' ने प्रस्तुत किया है। निर्देशक के. माधवन ने 'तुगलक' को आधुनिक परिवेश में देखने का एक सार्थक प्रयास किया है; वह 'तुगलक' को दुनिया में तानाशाही ताकतों की वृद्धि व उससे त्रस्त जनता के प्रतीक के रूप में देखते हैं। इस प्रतीक को उभारने के लिए माधवन ने मंच शारीरिक शैली का अच्छा इस्तेमाल किया है। अभिनेताओं की शारीरिक - क्रियाएं व संयोजन प्रभावित करते हैं।

पर प्रस्तुति की एक बड़ी कमजोरी उर्दू संवादों का अस्पष्ट व दोषपूर्ण उच्चारण था। यह भी कि कई प्रमुख कलाकारों के चेहरे भावशून्य दिखाई देते हैं। शारीरिक - रंगमंच शैली में भी संवाद - उच्चारण व चेहरे के भावों का उतना ही महत्व होता है जितना कि एक यथार्थवादी शैली में किए गए नाटक में।

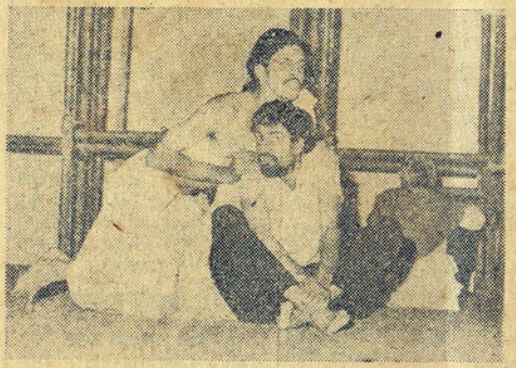

'तुगलक' के एक दृश्य में रजत कपूर (अजीज) और सोहराब हांडा

आनन्द प्रकाश व स्वाति हरकावत की मंच - सज्जा एक खोखली चरमराती व्यवस्था के प्रतीक रूप में सामने आती है, जिसके तले जनता कुचली जाती है। पर अगर वही जनता जागृत हो जाए तो एक ही झटके में व्यवस्था को हिला सकती है।

अल्काजी की प्रस्तुति में कुछ अभिनेताओं ने अपनी भूमिकाओं को इतनी परिपक्वता व संजीदगी से निभाया था कि उन्हें भुलाया नहीं जा सकता। खासकर मनोहर सिंह ने इस नाटक में अपने जीवन की सर्वश्रेष्ठ भूमिका की है। कहने का अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि 'चिंगारी' के अभिनेताओं के प्रयास में कोई कमी है। पर जिन दर्शकों ने अल्काजी की प्रस्तुति देखी हो उनके लिए इस प्रस्तुति के कलाकारों को भुला पाना मुश्किल है।

रजत कपूर (अजीज) सोहराब हांडा (आजम), मनोज कौल (तुगलक) व कुमार रमैया (शहबुद्दीन) आदि अभिनेताओं का अपने शरीर पर कमाल का संतुलन है। प्रमुख अभिनेता मनोज कौल का चोट के बावजूद प्रदर्शन करना रंगमंच के प्रति उसकी निष्ठा का परिचायक है। अन्य भूमिकाओं में प्रदीप रमैया (हिन्दू स्त्री) विशेष रूप से प्रभावित करते हैं।

अनुसिंह व सोहराब हांडा द्वारा डिजाइन की गई वेशभूषा ठीक थी। रंगों का चयन सूझ-बूझ से किया गया है।

पार्श्व - संगीत के बारे में एक प्रश्न उठता है — जब अभिनेता शरीर के माध्यम से इतना कुछ कह सकते हैं तो क्या आवाज का इस्तेमाल संवाद बोलने के अतिरिक्त अन्य ध्वनियां निकालने के लिए नहीं कर सकते? इस शैली के नाटक में साउंडट्रैक - संगीत खटकता है।

—कमल व्यास

शबाना: अभिनय के कई रंग

कुछ कलाकार जिस भी पात्र की भूमिका निभाते हैं उनका अपना मूल स्वरूप कहीं न कहीं उस भूमिका में विद्यमान रहता है, लेकिन शबाना आजमी एक ऐसी कलाकार हैं जो जिस भी भूमिका को निभाती है, उसमें इस कदर खो जाती हैं कि उसमें शबाना कहां हैं यह खोजना मुश्किल हो जाता है, और यही किसी भी कलाकार की सफलता की चरमसीमा कही जा सकती है।

वैसे तो अपनी पहली फिल्म 'अंकुर' में सर्वश्रेष्ठ अभिनय का राष्ट्रीय पुरस्कार पाकर शबाना ने फिल्म उद्योग में अभिनय कला

एक कला घर

भरत नाट्यम नृत्यांगना सरोजा वैद्यनाथन पिछले कुछ समय से

तारे, जुगनू और चिड़िया के पंख

जनगढ़ सिंह श्याम के ३०